M.A.(Education),Part-1,Paper-VI,
Presented by Dr.Pallavi,
Topic- Purity of Research Results

4.0 शोध-निष्कर्षों की शुद्धता की दृष्टि अनुसंधान के निष्कर्षों को शुद्धता की दृष्टि से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

(1) प्रयोगात्मक अनुसन्धान

(2) अप्रयोगात्मक अनुसन्धान

प्रयोगात्मक अनुसन्धान के निष्कर्षों की शुद्धता अधिक होती है क्योंकि इसमें नियन्त्रण, शुद्ध मापन तथा निरीक्षण विशेषआतों ध्यान में रखा जाता है। प्रयोगात्मक अनुसन्धान से निष्कर्षों की शुद्धता कम होती है क्योंकि मापन अधिकांश शुद्ध नहीं होता, निरीक्षणाए तथा नियन्त्रण भी सम्भव नहीं होता है।

4.1 शिक्षा-अनुसन्धान के कार्य

शिक्षा अनुसन्धान से अधोलिखित प्रमुख कार्य होते हैं-

(1) शिक्षा -अनुसंधान का प्रमुख कार्य शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार तथा विकास करना है। यह कार्य ज्ञान के प्रसार से किया जाता है ।

(2) शिक्षा की प्रक्रिया के विकास के लिये आन्तरिक सोपान नवीन में वृद्धि करना तथा वर्तमान ज्ञान में सुधार करना है।

शैक्षिक विकास का सम्बन्ध शिक्षा के विभिन्न पक्षों से होता है

(अ) शिक्षा के विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान में वृद्धि करना उसमें सुधार करना तथा प्रसार करना है।

(ब) शिक्षा की समस्याओं का समाधान करना, छात्रों के अधिगम में विकास करना। शिक्षण की प्रभावसाली प्रविधियों का विकास करना।

(स) शिक्षा-प्रशासन तथा शिक्षा प्रणाली में अनुसन्धान प्रक्रिया द्वारा सुधार तथा विकास करना है ।

शैक्षिक अनुसन्धान प्रक्रिया द्वारा शिक्षा के सिद्धांतों तथा अभ्यास में योगदान करना है। शिक्षा-शास्त्रियो को शैक्षिक प्रक्रिया के विकास हैतु नवीन प्रविधियो के प्रयोग में 'शिक्षा - अनुसंधान' सहायता प्रदान करती है।

4.2 शिक्षा अनुसंधान की विशेषताएं

(1) शोध कार्य का मुख्य आधार शिणा-दर्शन होता है। शिक्षा वैज्ञानिक प्रक्रिमा भी दर्शन पर आधारित होती है।

(2) शिक्षा अनुसंधान की प्रक्रिया कल्पना शक्ति तथा अन्तरदृष्टि पर आधारित होती है।

(३) शिक्षा -अनुसंधान में साधारण: अन्तः अनुशासन उपागम का प्रयोग किया जा है।

(4) शोध-अनुसंधान में निगमन तार्किक चिंतन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है।

(5) शिक्षा -अनुसंधान के निष्कर्षों से शिक्षा-प्रक्रिया को उत्तम तमा प्रभावशाली बनाया जाता है।

स्टीफन एम. कोरे का कथन है कि "उत्तम शिक्षा" का अर्थ होता है-उत्तम विकास, अनुदेशन उद्देश्यों का निर्धारण, छात्रो को
उत्तम प्रकार से अभिप्रेरणा देना, उत्तम प्रकार की शिक्षण विधियों को प्रयोग करना, उत्तम प्रकार के छात्रों को निष्पत्तियों का मूल्यांकन करना तथा सभी प्रकार की क्रियाओं का प्रशासन तथा सर्वेक्षण उत्तम प्रकार से करना।

(6) शिधा-अनुसंधान, भौतिक विज्ञान के शोध कार्यों के समान पूर्ण रूप में शुद्ध रूप में नहीं होता है, क्योंकि न्यादर्श जनसंख्या का शुद्ध रूप में प्रदर्शन नहीं करता है ।

(7) शिक्षा-अनुसन्धान केवल विशेषज्ञों द्वारा ही नहीं किये जाते हैं, अपितु कोई भी शिक्षक तथा शिक्षक छात्र शोध कार्य की क्षमता रखता है तथा उन्हें अवसर दिया जाता है।

(8) शिक्षा अनुसंधान व्यक्तिनिष्ठ होते हैं और सामाजिक तथ्यों पर आधारित होते हैं। सामाजिक तथा व्यावहारिक तथ्यों का
मापन अप्रत्यक्ष रूप में किया जाता है।

(9) शिक्षा -अनुसंधान परिमाणात्मक को अपेक्षा गुणात्मक अधिक होता है, जबकि प्रदत्तो के विश्लेषण में सांख्यिकी प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है। व्यापक-सामान्यीकरण साधारणतः गुणात्मक होते हैं।

(10) शिक्षा अनुसन्धान के कारण प्रभाव की पारस्परिक निर्भरता को आधार माना जाता है, परन्तु यह निश्चित करना कि क्या प्रभाव है और क्या कारण है? यह कठिन होता है।

(11) शिक्षा अनुसंधान में यांत्रिक प्रक्रिया का प्रयोग नहीं किया जा सकता है। नवीन मौलिक शोध कार्य द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में योगदान किया जा सकता है। इसके लिये नवीन प्रक्रिया प्रयुक्त को जाती है ।

4.3 शिक्षा-अनुसन्धान के चार स्तर

शिक्षा अनुसंधान की व्यवस्था चार स्तर पर की जाती है। इन चार सारों को पढ़ाय के क्रम में प्रतुत किया जाता है। उच्च स्तरीय अनुसंधान की पूर्व आवश्यकता उसे निम्न स्तरों अनुसन्धान की प्रविधिां होती है।

प्रथम स्तर-प्रदत्तों का संकलन (Data Collection)

द्वितीय स्तर आंतरिक वैधता (Internal Validity)

तृतीय स्तर बाह्य वैधता (External Validity)

उप चतुर्थ स्तर -सैद्धान्तिक -अनुसंधान (Theoretical Research),

इस प्रकार के अनुसंधानों की व्याख्या अधोलिखित है-

प्रथम स्तर-आंकड़ों का संकलन-इन स्तरों की व्यवस्था तथा वर्गोकरण प्रश्नों व समस्यो की प्रकृति के आधार पर की गई है । यह सबसे निम्न स्तर का अनुसन्धान माना जाता है जिसके अन्तर्गत अधोलिखित प्रकार के प्रश्नों का इस प्रकार के अनुसंधानों प्रथम का उत्तर देने का प्रयास किया जाता है-

क्या होता है? क्या समस्या है? क्या हम सही करना चाहते हैं? क्या यही होना चाहिए?

यह शोध का स्तर अधिक विश्वसनीय माना जाता है, क्योकिं जो कुछ भी हो रहा है, उसका मापन भली प्रकार किया जाता है । अन्य स्तरों के निष्कर्ष उसी स्तर के शोध कार्यों पर आधारित होते है । इन शोध कार्यो से शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार तथा परिवर्तन किया जाता है और उसके प्रभाव का मापन किया जाता है कि सुधार से क्या हुआ?साधारणत: शोध कर्ता इस स्तर से ऊपर नहीं जा पाते हैं ।

द्वितीय स्तर-आन्तरिक वैधता--इस स्तर के शोध कार्यो द्वारा अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाता है-जो हो रहा है उसका क्या कारण है? क्या इसका कारण मैं हूँ? क्या इसमें परिवर्तन किया जा सकता है?

प्रथम स्तर के शोध कार्यो द्वारा अनुसंधान कर्ता यह जानना चाहता है कि वह क्या चाहता है, उसे वह जानता है और अपना समय नष्ट नहीं करता है । द्वितीय स्तर के शोध कार्यो द्वारा कारण जानने का प्रयास किया जाता है कि जो हो रहा है वह क्यों हो रहा है? क्या कारण है? शोधकर्ता को कारणों को जानने के लिए अधिक समय ,धन तथा शक्ति का व्यय करना होता है । यदि नवीन विधि प्रभावशाली तथा मितव्ययिता है तब यह कारण को जान पाता है जो अधिक महत्वपूर्ण नहीं होता है ।इस स्तर के लिए प्रयोगात्मक विधि का अनुसरण किया जाता है ।

तृतीय स्तर -बाह्य -वैधता--इस स्तर के शोध - कार्यों से अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर ज्ञात किया जाता है । क्या यही क्रियाए भिन्न परिस्थितियों के अन्तर्गत होगी ? कहाँ तक शोध के निष्कर्षों का सामान्यीकरण किया जा किया जा सकता है?

इस प्रकार शोध कार्यो को शिक्षक द्वारा नहीं किया जाता है जबकि द्वितीय स्तर के शोध कार्यो शिक्षकों द्वारा ही किया जाता है । तृतीय स्तर के शोध कार्यो का महत्व तब अधिक होता है जबकि अन्य शोध कर्ताओ के निष्कर्षों का प्रयोग हम अपनी परिस्थितियों में करते हैं । इस प्रकार के शोध कार्यो द्वारा सामान्यीकरण का प्रतिपादन किया जाता है।

चतुर्थ स्तर सैद्धांतिक अनुसंधान-इस स्तर के शोध-कार्यो द्वारा अधोलिखित प्रकार के प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है-

इस स्तर के शोध-कायों के लिए पूर्व स्तर के शोध, पूर्व आवश्कता होते हैं। इस प्रकार शोध-कार्य वैज्ञानिक होते हैं जिनमें नवीन सिद्धान्तो तथा नियमों की खोज की जाती है । उदाहरण-यदी निरन्तर पुनर्वलन दिया जाए तया नवीन व्यवहारों को बातक शोघ्रता से सीख लेते हैं । इस स्तर के शोध कार्य में सामान्यीकरणों का प्रदर्शन ही विश्वसनीय रूप में नहीं किया जाता है । अपितु निहित सिद्धान्तों का भी उल्लेख किया है

इस स्तर के शोध-कार्यों में उतम प्रकार के अनुसन्धान ही नहीं किये जाते है अपितु उत्तम प्रकार के चिन्तक भी तैपार किये जाते हैं। इन चारों स्तर की जानकारी को विविध प्रकार की समस्याओं के अध्ययन में सहायता मिलतों है।

4.4 क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा

शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया को प्रयोग में लाने का श्रेष स्टीफेन एम कोरी को है। उनके अनुसार क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा निम्नलिखित है-

"अभ्यासकता अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से आगमन करता है जिसमे सही कार्य को दिशा मिल सके और निर्णयों का मूल्यांकन कर सके। इसे अनेक व्यक्ति क्रियात्मक अनुसन्धान कहते है।"

मैक ग्रेथटे के अनुसार ,"क्रियात्मक अनुसंधान व्यवस्थित खोज की क्रिया है जिसका उद्देश्य व्यक्ति या सामूह क्रियाओं में रचनात्मक सुधार तथा विकास लाना है ।"

क्रियात्मक अनुसंधान एक विधि है जिसके द्वारा कार्य प्रणाली की समस्माओं का अध्यनन वस्तुनिष्ठ रूप में किया जाता है और उनमें सुधार लाया जाता है ।क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग केवल शिक्षा के क्षेत्र में मे ही नहीं किया जाता है अपितु सभी प्रकार की संस्थाओं में प्रयोग किया जाता है ।जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अभ्यासकर्ता अपनी कार्य प्रणाली की समस्याओ के अध्ययन के लिए क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग करते हैं।

बोध प्रश्न

1. शैक्षिक अनुसंधान की परिभाषा और उसके अर्थ को समझाइए।
2. शोध निर्देशक अनुसंधान से आप क्या समझते हैं?